मंगल भवन अमंगल हारी
मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सुदसरथ अचर बहिारी
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम - २

हो, होइहै वही जो राम रचि राखा
को करे तरफ़ बढ़ाए साखा

हो, धीरज धरम मत्रि अरु नारी
आपद काल परखयि चारी

हो, जेहकि जेहि पर सत्य सनेहू
सो तेहि मलिय न कछु सन्देहू

हो, जाकी रही भावना जैसी
रघु मूरति देखी तनि तैसी

रघुकुल रीत सदा चली आई
प्राण जाए पर वचन न जाई
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम

हो, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता
कहहि सुनहि बहुवधि सब संता
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम